गीतांजलि

(बांग्ला से भोजपुरी में अनुवाद)

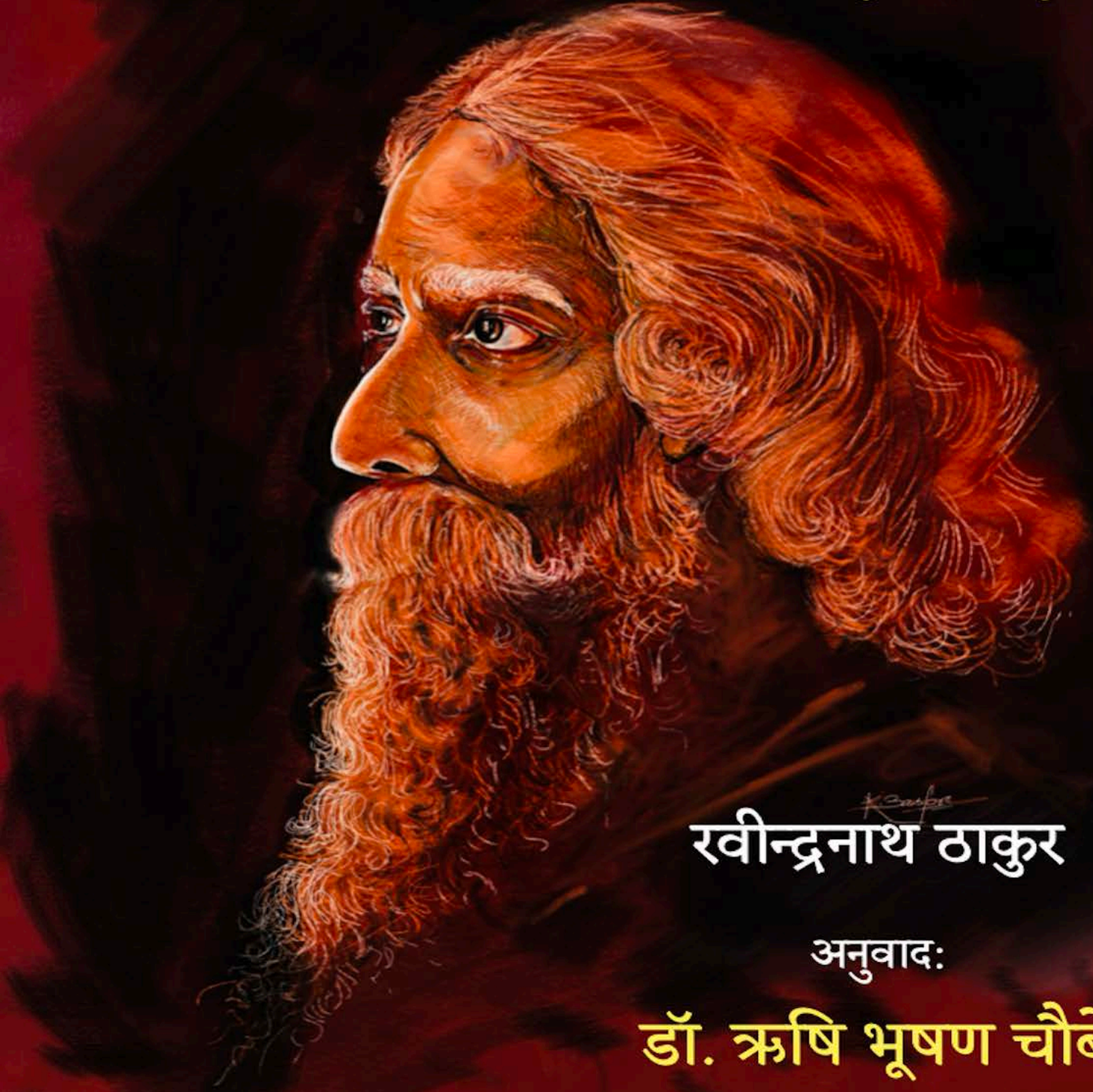

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अनुवाद:

डॉ. ऋषि भूषण चौबे

भोजपुरी में विश्व क्लासिक अनुवाद सीरीज के अंतर्गत

भोजपुरी में विश्व क्लासिक अनुवाद सीरीज के अंतर्गत

नोबेल पुरस्कार प्राप्ति के 113 बरिस बाद गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर (टैगोर) के विश्व प्रसिद्ध काव्य कृति

गीतांजलि

(बांग्ला से भोजपुरी में अनुवाद)

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अनुवाद: **डॉ ऋषि भूषण चौबे**

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जनवरी, 2026

© डॉ. ऋषि भूषण चौबे

ISBN: 978-93-7581-394-1

आवरण चित्र: कार्तिक बाँसफ़ोर

पिता की स्मृति को

जिनके आशीर्वाद

की ज़रूरत सदा बनी रहेगी!

अनुक्रम

आपन बात **10**

गीतांजलि पर महान लेखकन के विचार **18**

अनुवाद के बारे में कुछ नोट्स **22**

1. तू हमरा के अशेष कऽ दिहलऽ 39

2. जब तू गीत गावे के कहे लऽ 41

3. तु कइसन गीत गावे लऽ हे, गुणी ! 43

4. हमार सब अंग में तहार स्पर्श 44

5. क्षण-भर खातिर 46

6. हमरा के तुर लऽ, तुर लऽ, 48

7. हमार इ गीत आपन सभ अलंकार 50

8. राजा जइसन भेस में तु सजावे लू 51

9. अब अपना माथा पर अपना के ढोवब ना 53

10. जहाँ रहेलें सबसे अधम दीन से भी दीन 54

11. भजन-पूजन,साधना-आराधना सब छोड़ दऽ 56

12. अनादि काल से हमार ई यात्रा 58

13. एइजा जवन गीत हम गावे अइनि 60

14. हम नाना वासना में डूबल रहे वाला हईं 62

15. हम येइजा बानी खाली तहार गीत गावे खातिर 64

16. जगत के आनंद यज्ञ में हमार निमंत्रण आइल 66

17. प्रेम के हाथे पकड़ा जाइ एही से बइठल बानी हम 67

18. मेघ पर मेघ घेरले बा 69

19. हे मौन, यदि कुछ ना कहबऽ 70

20. जवना दिन कमल खिलल 71

21. अब हमरा आपन इ नाव के बहा देबे के होई 73

22. आज सावन-घन के गहन छाँह में 74

23. आज के झंझा रात में तहरा संग अभिसार 76

24. दिन जदि ढल गइल होखो 77

25. बीच-बीच में जब-तब अवसाद 79

26. उ त पास आ के बइठल रहलें 81

27. कहाँ बा प्रकाश, अरे प्रकाश कहाँ बा! 83

28. लिपटल बा सब बाधा, छोड़ावल चाहतानी 86

29. अपना नाम से ढाँकी के राखी ना जेकरा के 88

30. अकेले हम बाहर निकलनी 89

31. बन्दी, तहरा के, के बंधले बा 91

32. संसार में हमरा के अन्य जे भी प्यार करे ला 93

33. हमरा घरे उ दिन में आइल रहले हा 95

34. तहरा के आपन प्रभु बना के रख सकीं 96

35. मन जहाँ निर्भय सिर जहाँ ऊँचा 98

36. प्रभु! तहरा से हमार ई एगो अंतिम प्रार्थना बा— 100

37. सोचले रहनी मन में, जहाँ होखे के रहे ओइजे 102

38. चाहिना हम तहरे के चाहिना 104

39. जीवन जब सूख जाए 105

40. कतना दिन से हमार हृदय में बरखा नइखे बरसल 107

41. तु कहाँ बाड़ऽ कवना छाया के ओट में 109

42. बात इहे रहे कि एक ही नाव में हम-तु जाइब जा 113

43. हे नाथ, तब हम कवनो आयोजन ना कइले रहनी 115

44. एही तरह पथ निहारे में ही हमरा आनन्द बा 117

45. तू सुनला हा ना का, सुनला हा ना का, उनकर पग के ध्वनि 119

46. हमरा से मिले खातिर तू 120

47. राह देखते-देखत रात बीत गइल 122

48. आपन सिंहासन के आसन से तू उतर अइलऽ 126

49. हम त गाँव के रास्ता पर भीख माँगत फिरत रहनी 128

50. जब रात हो गइल, अँधेरा घिर आइल 130

51. हम सोचले रहनी तहरा से माँग लेब 133

52. तारन से जड़ल तहार कंगन बहुत सुन्दर बा 137

53. हम तहरा से कुछु ना चहनी 139

54. अबो भी तहार उहाई ना छूटल, तहार आँख नइखे खुलल 142

55. तबे तहार आनन्द बा हमरा पर 144

56. हमार अंतिम गीत में भर जाउ सभ राग-रागिनी 148

57. अंतहीन जगत के तट पर बच्चन के मेला लगाल बा 152

58. बबुआ के आँख में सभ ताप के हरे वाली 155

59. तहार लाल हाथ में जब रंगीन खिलौना रखिना 159

60. कातना अनजान लोगन से 161

61. कास बन में नदी के सूना तीर पर 163

62. हे हमार देवता! ये देह में भर के प्राण 165

63. जीवन में जवन चिरदिन रह गईल आभास में 167

64. तु ही आकाश हवऽ, तुही नीड़ भी हवऽ 170

65. तहार सूरज हाथ फइला के आवे लन 172

66. हमार शरीर के शिरा-शिरा में 174

67. का तू जोग नइखऽ दे सकत ? ई छन्द में, 176

68. हम अपना के बड़ा बनाइब 178

69. हमार अन्तरतर में उ के हवें! 181

70. वैराग्य-साधना में हमार मुक्ति नइखे 183

71. अब समय नइखे, छाया धरती पर उतर आइल 185

72. मृत्यु लोक के वासी लोग के तु जवन भी दिहलऽ प्रभु 187

73. हर दिन हम, हे जीवन के स्वामी 189

74. देवता जानि के दूरे खड़ा रहनी 191

75. विधाता जवना दिन आपन सृष्टि करे के 193

76. प्रभु, यदि इ जीवन में तहार दर्शन ना पा सकीं 196

77. शरद रितु के अंत के मेघ के तरह 199

78. बीच-बीच में सोची ना कि हमार कर्महीन- दिन 202

79. हे राजेन्द्र, तहार हाथन में अन्तहीन काल बा 204

80. तहार सोना के थारी में सजाइब आज 206

81. हम निरन्तर तहार विरह के देख रहल बानी 207

82. प्रभु के घर से आइल रहे जवना दिन 209

83. आज तु हमार घर के दुआर पर मृत्यु के दूत भेज लऽ 211

84. हमार घर में अब त उ नइखन, नइखन— 213

85. खंडित देवालय के देवता ! 215

86. अब कोलाहल वर्जित बा 217

87. मउत जवना दिन, साँझ में 219

88. हे हमार एह जीवन के शेष परिपूर्णता 221

89. एक दिन इ सब कुछ देखल ख़तम हो जाई 223

90. छुट्टी मिल गइल, भाई लोग 225

91. अब हमार जाये के बेला में 227

92. जीवन के सिंहद्वार से हो के 229

93. मृत्यु भी हमरा खातिर 231

94. जाये के दिन इ बात कही के ही जाईं 233

95. हमार खेल जब तहरा संगे होत रहे 235

96. आपन हार मान के तहरा गला में हार पहनाइब 237

97. जब हम पतवार छोड़ देब तब तु ओके थाम लेबऽ 239

98. रूप के सागर में हम डुबकी लगईले बानी 241

99. गीत के द्वारा तहरा के खोजी ना बाहर, मन में 242

100. तहरा के पहचानी ना 244

101. एगो नमस्कार से, प्रभु, 248

आपन बात

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर (टैगोर) के विश्व प्रसिद्ध रचना गीतांजलि के इ भोजपुरी अनुवाद हऽ। ई अनुवाद दू गो स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रहल बा। पहिला पुस्तक में 103 गीत-कविता के अनुवाद बा। एही गीतांजलि **'सॉंग ऑफ़ ऑफ़रिंग्स'** के साल 1913 में साहित्य के नोबेल सम्मान मिलल रहे। दूसरा पुस्तक में 157 गीत-कविता बा। इहे मूल भाषा बांग्ला में साल 1910 में 'गीतांजलि' नाम से प्रकाशित भइल रहे। एह मूल गीतांजलि में से 53 गीत आ कविता, अंग्रेजी में अनूदित गीतांजलि में, स्वयं गुरुदेव टैगोर के द्वारा चयनित भइल रहे। इ दूनों अनुवाद कार्य के हम अपना जीवन के अंतिम पड़ाव तक पूरा कऽ लेबे के भाव आ संकल्प (2015) के साथ धीरे ही धीरे आगे बढ़े के सोचले रहनी। लेकिन कोरोना महामारी (2020) के चलते हमार सोच में बदलाव आइल। एक साँझ (बइसाख, 2021) जीवन मृत्यु के महामोह में हमहूँ पड़ गइनी। तीन रात के भयावह संशय, सम्मोहन और विरक्ति के दौरान जवन एक मात्र महाग्रंथ हमरा के तिनका भर सहारा दिहलस उ इहे रहे— बांग्ला गीतांजलि।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में होखे वाला (साल 1999-2001 के दौरान) साप्ताहिक गीता प्रवचन के हम नियमित श्रोता रहनी। साल 2021 के बइसाख महीना में भारतीय संस्कृति के महानतम दर्शन-ज्योति गीता के